कद्दूवर्गीय सब्जियों में कीट एवं रोग की रोकथाम | कृषि कुंभ (अगस्त, 2022), खण्ड 02 भाग 03, पृष्ठ संख्या 19–21

कद्दूवर्गीय सब्जियों में कीट एवं रोग की रोकथाम

सौरभ माहेष्वरी[1]

[1]शोध छात्र

एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन प्रयोगशाला, कीट विज्ञान विभाग

गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौ0 वि0 विधालय, पन्तनगर, भारत।

E.mail : sourabhmaheshwari1998@gmail.com

गर्मी के मौसम में उगायी जाने वाली सब्जियों में कद्दू परिवार की सब्जियों का विशेष स्थान है। इस परिवार की प्रमुख सब्जियाँ कद्दू, लौकी, करेला, तोरई, परवल, टिण्डा, खीरा, ककड़ी, खरबूजा एवं तरवूज आदि हैं। खरबूजा, तरबूज एवं ककड़ी को केवल गर्मी के मौसम में उगाया जाता है, जबकि अन्य सब्जियों को गर्मी एवं बरसाव दोनों मौसमों में सफलतापूर्वक उगाया जाता है। गर्मी के मौसम में सबसे अधिक हरी सब्जियों की पूर्ति इसी वर्ग से होती हैं। इन सब्जियों की खेती में सभी उन्नत तकनीकों का समावेश करके कम क्षेत्रफल में अधिक उत्पादन लिया जा सकता है। परन्तु कभी–कभी उन्नत बीज, सन्तुलित खाद एवं पूरी सिंचाई करने के बाद भी कीटों के प्रकोप के कारण फसल अच्छी नहीं होती हैं। कीटों के ग्रसित हो जाने पर इन सब्जियों के बाजार भाव घट जाते हैं एवं किसान भाईयों को काफी हानि उठानी पड़ती है। अतः इस परिवार की सब्जियों को हानि पहुँचाने वाले कीटों की पहचान उनसे होने वाली हानि एवं उनके नियंत्रण के उपायों के बारे में पर्याप्त जानकारी होना आवश्यक है। इस वर्ग की सब्जियों को हानि पहुँचाने वाले मुख्य कीटों की पहचान आदि एवं नियंत्रण के तरीके निम्नलिखित हैं :–

लाल कद्दू भृंग (लालडी)

यह भृंग चमकीले लाल रंग की होती है। इसके शरीर के ऊपर के हिस्से का रंग लाल एवं नीचे के हिस्से का रंग काला होता है। इसकी

सूंडियाँ क्रीमी रंग की होती हैं। इस कीट के प्रौढ़ एवं सूंडियां दोनों ही नुकसान पहुँचाते हैं। इसकी सूंडियाँ जमीन के नीचे रहती हैं और पौधों की जड़ों एवं तनों में छेद कर देती हैं जिससे वे मर जाते हैं। ये संडियाँ जमीन के सम्पर्क में आने वाले फलों के अन्दर छेद करके उन्हें नष्ट कर देती हैं। भृंग छोटे पौधों की कोमल पत्तियों में छेद करके उन्हें खा जाती हैं जिससे पौधे पत्ती रहित हो जाते हैं और अन्त में मर जाते हैं। इस कीट का आक्रमण मार्च से अक्टूबर तक रहता है।

नियंत्रण

- प्रौढ़ कीटों को सुबह के समय इकट्ठा करके मार देना चाहिए।
- लौकी, तोरई आदि फसलों की अगेती बुवाई करने पर इस कीट का प्रकोप कम होता है।
- 12.5 किग्रा कार्बेराइल (सेबिन) धूल में 12.5 किग्रा राख मिलाकर प्रति हेक्टेयर बुरकाव करने से इस कीट का नियंत्रण हो जाता है। औस के समय फसल पर बुरकाव नहीं करना चाहिए।
- 2.0 लीटर क्लोरपाइरिफॉस 20 ई0सी0 को 2. 5 किग्रा राख में मिलाकर प्रति हैक्टेयर की दर से पौधों की जड़ों के पास मिट्टी में मिला दें। इससे इस कीट की सूंडियों के साथ–साथ अन्य कीट जैसे दीमक आदि भी मर जाते हैं।
- मैलाथियान 50 ई0सी0 का छिड़काव 1 मिली प्रति लीटर पानी के अनुपात में घोलकर करने से इस कीट का नियंत्रण हो जाता है। छिड़काव के एक सप्ताह बाद ही फलों को तोड़कर खाने के लिए प्रयोग करें।

फल की मक्खी

यह लाल भूरे रंग की मक्खी होती है जिसके सिर पर काले एवं सफेद रंग के धब्बे पाये जाते हैं। वृक्ष पर हरापन लिये हुए पीले रंग की लम्बी एवं मुड़ी हुई धारियां होती हैं। इसके मैगट का रंग धुमेला सफेद होता है जो एक सिरे पर मोटा तथा दूसरी तरफ पतला होता है। इसका विशेष प्रकोप लौकी, तोरई, खीरा आदि पर होता है।

मादा फल मक्खी फलों की बारीक त्वचा में एक स्थान पर एक छेद करके अण्डे देती है। एक फल में इस तरह के 3 से लेकर 5 तक छेद पास–पास पाये जाते हैं। अण्डे देने के बाद मादा उस छेद को हल्के, भूरे लेस दार पदार्थ से ढक देती हैं। अण्डों से 3 से 5 दिनों के बाद सूंडियाँ निकलती हैं जो फलों के अन्दर ही गुदे को खाकर नष्ट कर देती हैं। क्षतिग्रस्त फल इस कीट के अण्डा देने के स्थान से टेढ़ा हो जाता है और आसानी से पहचाना जा सकता है। ज्यादा दिन हो जाने पर फल सड़ जाते हैं।

नियंत्रण

- फसल कटने के बाद खेत की गहरी जुताई कर दें जिससे भूमि में पड़े इस कीट के प्यूपा नष्ट हो जायें।
- क्षतिग्रस्त फलों को इकट्ठा करके खेत से दूर गहरे गढ़े में दबाकर नष्ट कर दें।
- प्रौढ़ कीटों को मारने के लिए 2 लीटर पानी में 500 ग्राम शीरा, 20 मिली मेलाथियान 50 ई0सी0 तथा 50 मिली डाइजिनान 20 ई0सी0 मिलाकर खेत में जगह–जगह उथले बर्तन में रख देने चाहिए।
- 500 ग्राम शीरा एवं 2.0 लीटर मेलाथियान को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार दूसरा छिड़काव एक सप्ताह बाद करें।

हरा तेला या जेसिड

इसके प्रौढ़ हरापन लिये पीले रंग के होते हैं। ये पित्तयों पर हमेशा तिरछे होकर चलते हैं। इसके शिशु एवं प्रौढ़ दोनों ही पौधों की पत्तियों से द्रव पदार्थ चूस लेते हैं जिससे पत्तियाँ पहले पीली पड़ती है और फिर लाल–भूरे रंग की होकर सूख जाती है और गिर जाती हैं। पौधे आकार में छोटे रह जाते हैं जिन पर फूल एवं फल कम संख्या में एवं छोटे लगते हैं इस कीट का आक्रमण फरवरी से अक्टूबर तक होता है।

नियंत्रण

- इसके नियंत्रण के लिए इण्डोसल्फॉन 35 ई0सी0 का 1.5 मिली प्रति लीटर पानी के अनुपात में घोल बनाकर छिड़कने से इस कीट का नियंत्रण हो जाता है।

प्रमुख रोग और उनकी रोकथाम

फल विगलन

रोग का प्रकोप उन फलों पर पहले होता है जो भूमि के सम्पर्क में रहते हैं। पहले रोगी फलों का छिलका नरम, गहरे हरे रंग का और जल सिक्त सा दिखने लगता है। ये जल सिक्त स्थान धीरे–धीरे जलीय मृदु विगलन के रूप में बदल जाते हैं। नमी मिलने पर इस विगलित भाग पर रूई के समान कवक जाल विकसित हो जाता हैं। कवक की अत्यधिक वृद्धि होने पर फल ऐसे दिखाई देने लगते हैं जैसे रूई से ढके हुए हों। तरबूज में यह रोग छोटे फलों में पुष्प के अग्रभाग की ओर से शुरू होता है। वर्षा होने और उसके बाद इस रोग का प्रकोप खेतों में अधिक हो जाता है। बाद में फल पूर्णतः सड़ जाता है और उसमें से एक विशेष प्रकार की गंध आने लगती है।

रोकथाम

- जहाँ तक सम्भव हो, फलों को भूमि के सम्पर्क में आने से बचाया जाना चाहिए। लोकी, तोरई, खीरा, करेला, परवल, चिर्चिण्डा, कुंदरू इत्यादि फसलों में लताओं को समुचित सहारा देने की व्यवस्था की जानी चाहिए। शेष फसलों में फल बनना आरम्भ होने पर जमीन पर सूखी घास रख देनी चाहिए ताकि फल भूमि के सम्पर्क में न आये ।
- जल निकास की उचित व्यवस्था की जानी चाहिए। आवश्यकता से अधिक सिंचाई कदापि नहीं की जानी चाहिए।
- डाइथेन – एम–45 नामक कवकनाशी का 0. 25 प्रतिशत घोल बनाकर उसका छिड़काव करना चाहिए। छिड़काव करने के एक सप्ताह बाद तक फल नहीं तोड़ना चाहिए।
- उचित फसल चक्र अपनाना चाहिए ।

झुलसा :

पहले पत्तियों पर हल्के बादामी धब्बे बनते हैं। बाद में पत्तियाँ काली पड़कर सूखने लगती हैं।

रोकथाम

- उचित फसल चक्र अपनाना चाहिए ।
- डाइथेन एम 45 का 0.25 प्रतिशत घोल बनाकर छिड़काव किया जाना चाहिए।